श्री शंकराचार्य जी का

निर्वाण शट्कम

विवरणः ब्रह्मर्षि तटवर्ति वीर राघव राव

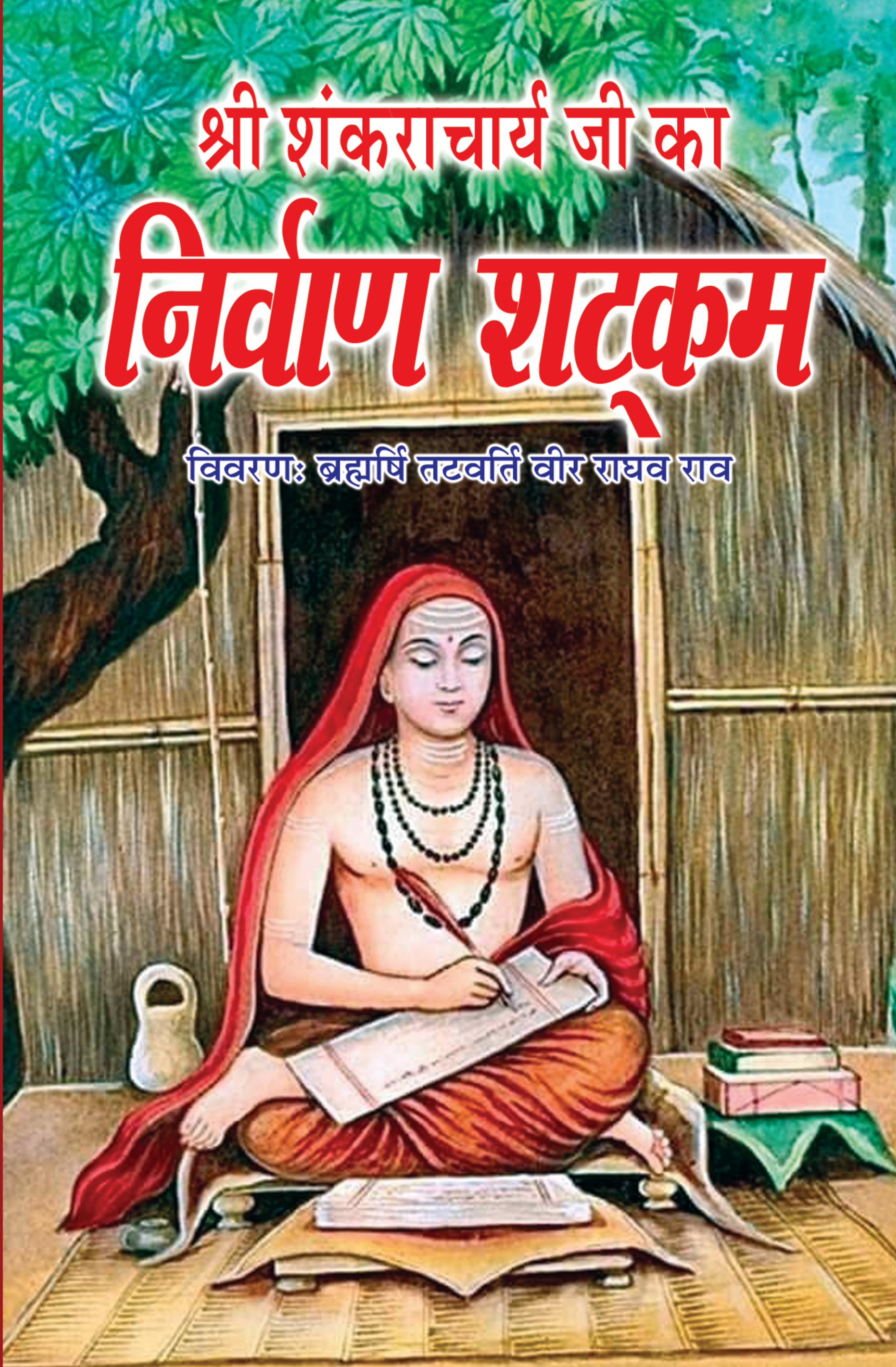

शंकराचार्य जी का

निर्वाण शट्कम

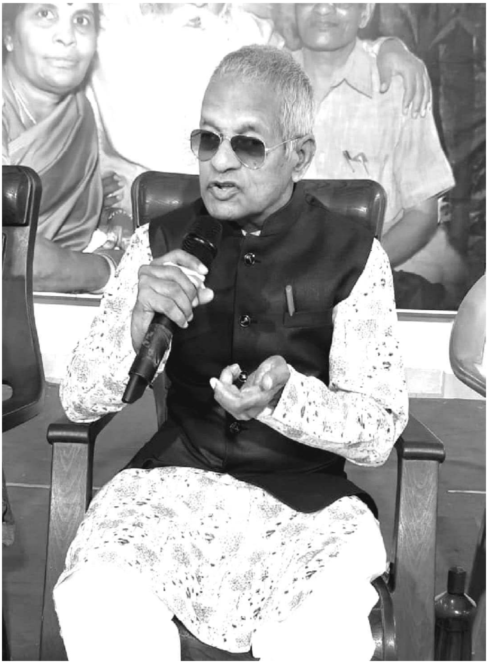

विवरणः ब्रह्मर्षि तटवर्ती वीर राघव राव

हिन्दी अनुवादः श्री नागेश्वराव

For Books Please Contact :

TATAVARTHY VEERA RAGHAVARAO

Tatavarthivari Street, BHIMAVARAM-534201.

W.G.Dist., A.P. Ph: 94403 09812

Rs.50/-

ब्रह्मविध्वरिष्ठ तटवर्ति राज्यलक्ष्मी के हिन्दी किताब

1) एक और जन्म Rs.160/-
2) साधना में स्थितियाँ.................................. Rs.80/-
3) ज्ञान माला... Rs.70/-
4) श्री दत्तात्रेय जी का 24 गुरूओं ।................ Rs.70/-
5) अगर मानव को योगी बनना है तो ?........... Rs.60/-
6) गुरु पूर्णिमा का विशिष्टता Rs.60/-
7) महात्माओं का संदेशों............................... Rs.50/-
8) मानव के कर्तव्यों.................................... Rs.50/-
9) गुरु पूर्णिमा का विशिष्टता Rs.50/-
10)शाकाहार ही मानव का आहार है!.............. Rs.50/-

ध्यान की पद्धति - श्वास पर ध्यान

हर किसी को अपने लिए उपयुक्त सुखासन में आराम से बैठकर.. दोनों हाथों को मिलाकर... आंखों को बंद करके... सहज रूप से होने वाले उच्छ्वास और निश्वास पर गौर करना है!

बीच में कई सारे विचार हमारे मन में आते रहते हैं, उन सबका खंडन करते हुए... वापस हमारे ध्यान को श्वास पर लाना है... ध्यान भटकता रहेगा लेकिन वापस श्वास पर ध्यान लाते रहना है. धीरे-धीरे.. विचार रहित स्थिति प्राप्त होगी... चित्तवृत्ति का निरोध होगा मन शून्य बन जाएगा। मन शांति प्राप्त करेगा। यही ध्यान स्थिति है।

इस विचार रहित स्थिति में प्राप्त होने वाले शारीरिक, तंत्रिका व्यवस्था और आत्मानुभव पर ध्यान देते रहना है। उस स्थिति में असीमित विश्वमय प्राणशक्ति शरीर के अंदर प्रवाहित होकर तंत्रिका व्यवस्था की शुद्धि करती है। इस शक्ति के कारण सारे रोग दूर हो जाते हैं। तंत्रिका व्यवस्था की शुद्धि के कारण सारे कर्म दूर हो जाते हैं।

साधारण रूप से मनुष्य की उम्र जितनी है.. कम से कम उतने मिनट तक.. हर रोज दिन में दो बार... ध्यान करना है।

श्री शंकराचार्य जी का
निर्वाण शट्कम

''विभाजनकारी के विधि से यह नहीं, यह नहीं, करके असत्य वस्तुओं को अलग करने के बाद, जो भी वेदांत शास्त्र से सूचना किया गया हैं, वही ब्रह्मं है। उतना ही नहीं जो भी द्वैत नहीं है, निरंतर आनंद स्वरूप है, वह एक ही है, वही ब्रह्मं है, को जानना चाहिए।''

मतलब यहां पर सृष्टि में, सत्य और असत्य दोनों मिला हुआ है, अवास्तविकता और वास्तविकता दोनों मिले हुए हैं, राक्षसों और देवताओं मिलकर रहते हैं। सब कुछ मिलकर रहने वाला ही सृष्टि है, यह प्रपंच है।

माया, सत्य यह दोनों भी मिलकर ही रहते हैं। विचित्र कि बात क्या है ? कि यह माया मतलब असत्य ही सच्चाई जैसे दिखता है। इसीलिए इनका विभाजन करना चाहिए। कैसे ? एक-एक को लेकर यह सत्य नहीं है, यह सत्य नहीं है, करके असत्य वस्तुओं को अलग करके, मतलब बाजू में रखने के बाद, अंत में जो भी रहता है, जैसे वेदांत शास्त्र में कहा गया है, जानिए वही ब्रह्मं है।

उस असत्य वस्तुओं, जिस को विभाजित करना है, और अलग करना है, वह क्या क्या है ? का विषयों के बारे में भी श्री शंकराचार्य जी ने निर्वाण शट्कम में बहुत विस्तार से दिया गया है।

शट मतलब छे। निर्वाण शट्कम मतलब निर्वाण पाने के बाद उनके स्थिति कैसे होता है, इन 6 श्लोकों में बताया गया है। अगर आप इनको ग्रहण कर सकते हैं, और उस स्थिति तक आप पहुंच सकते हैं, तब आप निर्वाण पाया समान है। और अभी भी अगर आप उस भाव से रहते हैं, तब उस स्थिति तक पहुंचने के लिए और बहुत समय लगता है। इसीलिए इन 6 श्लोकों में श्री शंकराचार्य जी ने जैसे कहा है, क्या-क्या

कहा है, इन सारे विषयों को हम जानते हैं।

1) मनो बुद्ध्यहंकार चित्तादि नाहं
न च श्रोत्र जिह्वे न च घ्राणनेत्र ।
न च व्योम भूमि र्न तेजो न वायुः
चिदानंद रूपः शिवोहम शिवोहम ।।

तात्पर्यः मानस, बुद्धि, चित्त, अहंकार, करके चार वृतियां करने वाला अंतःकरण मैं नहीं हूँ। नाक, आंख, कान, जीभ, और चर्म, करके पांच ज्ञान इंद्रियों मैं नहीं हूँ। आकाश, भूमि, जल, अग्नि, वायु, करके पांच भूतों, मैं नहीं हूँ। मैं चिदानंद रूप शिव ही हूँ, शिव ही हूँ।

श्री शंकराचार्य जी ने कहा है कि मैं मानस नहीं हूँ। लेकिन हर कोई इस मानस को ही प्रामुखता देते हैं, इस मनस को संतुष्ट करने को प्रयत्न करते हैं, अपना पूरा जीवन उसी के लिए समर्पित करते हैं, और यह सब कुछ करने के बाद अगर देखेंगे, कि आप मानस है, तो मालूम पड़ता है कि आप मानस नहीं है।

आप देखिए, इस बाहर के इंद्रियों मतलब ज्ञानेंद्रियां या कर्मेंद्रियां, मानस के हिसाब से काम करते हैं। मानस जो भी कहता है वही करते हैं। इन इंद्रियों द्वारा ही मानस को बहुत संतुष्टी मिलती है। इसीलिए मानव लोग अपना पूरा जीवन मनस को संतुष्ट करने के लिए ही प्रयत्न करता है। मनस भी इन इंद्रियों द्वारा सुख पाने के लिए चाहता रहता है।

आंखों द्वारा अपनी पसंदीदा देखना चाहता है, कान द्वारा पसंदीदा सुनना चाहती है, नाक द्वारा पसंदीदा सुगंध पाना चाहता है, जीभ द्वारा पसंदीदा खाना चाहती है, चर्म द्वारा सुख पाने के लिए गर्मियों में कूलर लगाते हैं, ऐसे ही सर्दियों में हीटर लगाने को चाहता है ।

ऐसे जीते जीते बहुत सुख पाया है करके सोचते हैं। ठीक है सुख पाया है, और सुख पाने के लिए प्रयत्न कर रहे हैं। लेकिन इस सुख कौन अनुभव कर रहा है ? वह सुख सिर्फ मानस ही अनुभव कर रहा है। और

इसी सुख के लिए पूरा जीवन प्रयत्न करते हैं। और अगर मानस को ऐसे सुख पाना है, तब मुख्यता पैसे की जरूरत है।

इसीलिए हर एक व्यक्ति पैसे कमाने के पीछे पढ़ते हैं, और दिन में ज्यादातर समय उसी के लिए समर्पित करते हैं। कुछ लोग काम करते हैं, कुछ लोग व्यापार करते हैं, और कुछ लोग अपना नैपुन्य के हिसाब से कुछ ना कुछ वृत्ति करते हैं। ऐसे कई तरह के काम करते हैं और पैसे कमाते हैं।

किस लिए ? अपना मानस को संतुष्ट करने के लिए। और अपना पूरा जीवन उसको संतुष्ट करते ही रहते हैं। असलियत में आप यह मानस है क्या ? मतलब नहीं है। असलियत में आप कौन हैं ? मतलब आप चिदानंद रूप शिव है, करके कहते हैं श्री शंकराचार्य जी। हर वक्त आनंद रहना वाला ही आनंद स्वरूप शिव, मतलब उस ब्रह्म ही मैं हूँ। उसी को आत्मा भी कहलाते हैं। मतलब आप आत्मा होकर अपना पूरा जीवन इस मानस के पीछे पड़ गए हैं। मानस को संतुष्ट करने में ही आप कष्ट कर रहे हैं, और कमा रहे हैं, और सुखी रखते हैं।

इसीलिए पत्री जी कहते हैं कि अपनी जरूरतों तक ही सीमित रहना है। अपने चाहतों का गुलाम नहीं बनना है। चाहते मानस को संबंधित है, ज़रूरतें शरीर संबंधित है। इस शरीर को चलाने के लिए उनको कुछ ज़रूरतें हैं। सही वक्त पर खाना खाना। और इसी के बारे में पत्री जी कहते हैं कि एक टुकड़ा रोटी और थोड़ा सा अचार काफी है न।

मतलब ऐसे जीना को नहीं कहा है। इसका मतलब यही है कि जो भी कुछ है वह शरीर को देने से इसका जरूरत पूरी हो जाती है। कोई भी कपड़ा पहनने से जरूरत पूरा हो जाती है। इसके लिए ज्यादा कीमती कपड़े या रेशम के कपड़े कोई जरूरत नहीं है। कोई एक छोटा मकान अच्छा है, इसका कोई महल की जरूरत नहीं है।

आप आत्मा है और उसका उच्च स्थिति पाने के लिए आपको चाहिए साधना, और ज्ञान पाना चाहिए। यह दोनों संभव है जब तक शरीर

है। वह शरीर काला हो या सफेद हो, छोटा हो या लंबा हो, कैसे भी हो। आत्मा के लिए उच्च स्थान पहुंचने के लिए काम जो करना है या आत्मा को लाभ पहुंचाने वाले काम इस शरीर के साथ करवाना चाहिए। इसीलिए आप जो आत्मा है, इस भूमि पर आकर यह शरीर लिए हैं। केवल इस शरीर को सुख रखने के लिए आप नहीं आए हैं।

विचित्र की बात क्या है! जिस शरीर से आप साधना करवाने चाहते हैं, उस शरीर, वह सब कुछ छोड़कर बीच में रहने वाला मानस को प्रमुखता देते हैं। आत्मा के बारे में आपका शरीर ध्यान नहीं दे रहा है। एक काम के लिए आए हैं और कर रहे हैं कुछ और। इसका कारण कौन है ? मतलब मानस ही कारण है। इस मानस के माया में पड़कर, शरीर को जिस काम के लिए उपयोग करना है वह नहीं कर कर, कुछ और के लिए उपयोग कर रहे हैं।

सच में कहना है तो जो भी लोग इस ज़ूम क्लास में आ रहे हैं, और भीमावरम क्लास में आ रहे हैं, वही लोग मानस के माया जाल से निकलने का प्रयत्न कर रहे हैं। और बाकी लोग मानस के माया जाल में फंसकर ऐसे ही जी रहे हैं। क्योंकि ऊपर लोकों में जब रहते हैं आप सिर्फ एक आत्मा ही होगा, और वहां पर कुछ निर्णय लेती है। उसी को प्रणालिका कहलाता है। जो आप आत्मा हैं एक शरीर लेकर उस तरह के कामों करने के लिए इस पृथ्वी पर एक प्रणालिका के साथ आते हैं।

वहां पर सिर्फ आत्मा है इसीलिए आपको आत्मा को महान लोगों से कुछ काउंसलिंग/ उपबोधन होता है। वह सभी लोग हर समय सिर्फ आत्मा के उन्नति के बारे में बताते हैं। वह लोग पहले ही बताते हैं, आप पृथ्वी पर जा रहे हैं, शरीर लेंगे, शरीर के साथ-साथ मानस भी तैयार होता है, उसके माया जाल में नहीं पडना है, इसका प्रयोजन को नहीं मानना है, उनके तरफ आकर्षित नहीं रहना है। और उस मनस के गुलाम नहीं बनना है, यह काम करो, वह कम करो और आप कितना महान बन

जाएंगे करके ऊपर वाले वहां पर उपबोधन करते हैं। आपको मतलब आत्मा को।

लेकिन भूमि पर आकर शरीर लेने के बाद यह सभी भूल जाते हैं। सिर्फ एक शरीर ही दिखता है इसीलिए इस को मैं समझते हैं। आत्मा के बारे में कोई भी अवगाहन नहीं होता है। इसीलिए उस शरीर के लाभों के लिए ही काम करते रहते हैं। भूमि पर आकर हम भूल जाते हैं का विषय प्रकृति को मालूम है।

इसीलिए प्रकृति में एक इंतजाम है। प्रकृति क्या करती है ? अपने जीवन में कई सारे संगठनों द्वारा, और ऐसे ही कुछ लोगों द्वारा जो माया को हासिल किए हैं, ऐसे सद्गुरुओं द्वारा अपना कर्तव्य को बोधन करते हैं और अपना लक्ष्य को याद दिलाते हैं, और अपना प्रणालिका प्रकार जीने को सूचनाओं देते हैं।

ऐसे ही इस प्रपंच में इनके बारे में बताने के लिए महान लोग और योगी लोगों का लिखने वाले कई सारे ज्ञानमय किताबें हैं। उन किताबों द्वारा भी यह सारे विषयों बताते हैं। ऐसे कई सारे प्रकार से प्रकृति ने, आत्मा जो भूल गई है उन विषयों को याद दिलाती है। उतना ही नहीं अंतरात्मा प्रबोधन द्वारा मतलब शरीर में आत्मा द्वारा संकेत देती रहती है। इतने सारे प्रकार में आपको याद दिलाती रहती है, फिर भी इतना बलवान माया के प्रभाव में रहने वाला मनस को इन सभी को छोड़कर सिर्फ अपने सुख को देखती हैं।

आप एक बार श्री रमण महर्षि को देखिए, जो कुछ मिलता था वही खाता था। वह अपने कपड़ों के लिए, या कुछ अलंकार करने के लिए लाखों, करोड़ों रुपए खर्च नहीं किया है। थोड़ा बहुत बारिश से और धूप से रक्षण के लिए एक छोटा सा घर में रहता था, बस। उनको कुछ चाहतें नहीं थे, सिर्फ अपने जरूरतों तक ही सीमित रहकर, आत्मा का उन्नति के लिए श्रम किया है। आपको उस तरह जीने कि जरूरत नहीं है।

आपके पास जो कुछ भी है उसको अनुभव कीजिएगा, कुछ नहीं है करके रोना नहीं, और उन चीजों को कमाने के लिए गलतियां और पाप नहीं करना चाहिए। अपने परिवार को देखभाल करते-करते ही अपने खाली समय में आत्मा के लिए श्रम कीजिएगा करके पत्री जी ने हमें बोध किया है। आपका जरूरतों को छोड़ने को कभी उसने कहा नहीं है। आपका परिवार को संभालते ही, आपको निर्वाण पाना चाहिए, संसार में ही निर्वाण कहा है पत्री जी ने।

इसीलिए जो भी इस अंत:करण मानस को, मैं नहीं हूँ जानकर, तीव्र साधना करने से उस मानस का प्रामुखता कम कर कर, अपने मानस को अपना स्वाधीन में रखते हैं, वही लोग निर्वाण पा सकते हैं। ऐसी स्थिति पाकर यह सभी मैं नहीं हूँ, मैं शिव हूँ, जो ब्रह्मं को जानेंगे वही लोग निर्वाण पाया है। यही सब कुछ इस श्लोक द्वारा श्री शंकराचार्य जी हमें बोध करते हैं ।

इसने और क्या कहा है कि, आंख, कान, जीभ करके ज्ञानेंद्रियों भी मैं नहीं हूँ। और उसने कहा है कि आकाश, भूमि, जल, अग्नि, वायु करके पांच भूतों भी मैं नहीं हूँ। क्योंकि इन पांच भूतों से ही शरीर बनाया हुआ है। वह सभी मैं नहीं हूँ। मैं शिव हूँ, मैं ब्रह्मं हूँ का विषय को जानने को कहा है।

श्री शंकराचार्य जी द्वारा कहने वाला

दूसरा श्लोक ।

इस सृष्टि में दिखने वाली और सृष्टि किया गया कुछ भी शाश्वत नहीं है। वह सभी कुछ ही देर के लिए रहने वाले हैं। वह सभी उस ब्रह्मं से सृष्टि किए गए हैं।

इसलिए उस ब्रह्मं ही शाश्वत है। उस ब्रह्मं से ही सृजन किया अंश भी शाश्वत ही है। जो सृष्टि किए गए हैं वह अलग है, और उनसे सृजन हुए हैं वह अलग है। उनसे जो सृष्टि किए गए हैं वह सभी कुछ ही देर के लिए रहते हैं। वह जो सृष्टि किए गए हैं कुछ देर के लिए रहेगी और इसके बाद अदृश्य हो जाएंगे।

लेकिन उनसे सृजन हुआ उस अंशात्मा भी ब्रह्मं है। सब एक ही है। अंश और वह, दोनों एक ही है। इसीलिए जीसस क्राइस्ट ने कहा कि मैं और मेरे पिता दोनों एक ही है। और मैं और आप, दोनों एक ही हैं। यहां पर हम सभी लोग सृष्टि किया गया शरीर को ''मैं'' समझते हैं। लेकिन यह दिखनें वाली और सृष्टि किए गए शरीर हम नहीं है। हम सब आत्माएं हैं। यही रहस्य है जो जानना चाहिए और यही सत्य है जो जानना चाहिए।

जब तक यह नहीं जानेंगे तब तक, कोई भी जन्मों लेते ही रहेंगे। जब अपने आप को जानेंगे तभी जन्म नहीं होगा। श्री रमण महर्षि भी कहते थे कि अपने आप को जानो। क्या जानना है? मैं ब्रह्मं हूँ को जानना चाहिए। बहुत कुछ है, लेकिन कुछ भी मैं नहीं हूँ। उस स्थिति तक जब हम पहुंचेंगे तभी हमें जन्म नहीं रहेगा।

इस लोक में सभी लोग इसको जानने के लिए प्रयत्न नहीं कर कर, जबरदस्ती समझकर शादी करते हैं, जबरदस्ती समझकर बच्चे पैदा करते हैं। और बहुत समस्याओं आए हैं करके कहते हैं। जन्म लेने के बाद, कुछ भी समस्याएं नहीं होंगे क्या? जितने सारे चीजों से आप तुलना

करेंगे तो भी बाधाएं जरूर रहेगी। जबकि श्री शंकराचार्य जी ने कहा है कि मानव लोग जबरदस्ती इस गंदगी में उतर रहे हैं। तो इसके बारे में श्री शंकराचार्य जी द्वारा कहा हुआ दूसरा श्लोक अभी जानते हैं।

2) न च प्राण संज्ञो नवै पंचवायुः
न व सप्त धातु र्नवा पंचकोषः ।
न वाक्पाणि पादौ न चो पस्थ पायू
चिदानंद रुपः शिवोहम शिवोहम ।।

तात्पर्यः प्राण, अपान, उदान, व्यान, समान, करके पांच वायु, मतलब पांच प्राणों, मै नहीं हूँ। ऐसे ही इस स्थूल शरीर का कारण रस, रक्त, मांस, मेधा, हड्डियां, अस्थिमज्जा, शुक्ल सोणितायें, ऐसे सत धातुओं, मैं नहीं हूँ।

अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनंदमय, करके पंच कोशों, मै नहीं हूँ। उतना ही नहीं कर्मेंद्रियां जैसे हाथ, पैर, वॉक, मल द्वार और मूत्र द्वार, मैं नहीं हूँ। मैं चिदानंद रूप शिव ही हूँ, चिदानंद रूप शिव ही हूँ, को कहा है।

अगर यह आपको अच्छी तरह याद रहेगा, तब आपको ममकार नहीं रहता है। इनके लिए अपना जीवन को बर्बाद नहीं करते हैं। विचित्र की बात यह है कि जबरदस्ती हम इसमें फस जाते हैं। हमें क्यों सोचना है कि यह जबरदस्ती करना है ? और बाद में क्यों कहना है कि मैं फंस गया हूँ ?

इसी प्रकार बहुत लोग इन पांच प्राणों को ही आत्मा समझते हैं। आत्मा अलग है और पांच प्राण अलग है। शरीर में पांच तरीके के वायु संचार को ही पांच प्राण कहते हैं। और शरीर में जब तक आत्मा रहती है, आत्म शक्ति रहती है, तभी यह वायु का संचार रहती है। मतलब इन पांच प्राणों शरीर में रहते हैं। इसीलिए कहते हैं कि जब आत्मा निकल जाती है यह पांच प्राणों हवा में मिल जाते हैं। ऐसी हवा में मिल जाते हैं को क्यों

कहते हैं ? मतलब हवा, हवा में नही मिल जाती है तो और किस में मिलता है !

जब कोई मर जाता है हम कहते हैं कि उसका प्राण चला गया है। और यह मामूली सी बात हो गई है। प्राण चला गया है मतलब उस प्राण ही आत्मा है का समझ रहे हैं बहुत लोगों । लेकिन पांच प्राणों अलग है, और आत्मा अलग है। आत्मा और इन पांच प्राणों के बीच कुछ भी संबंध नहीं है। यहां पर श्री शंकराचार्य जी ने स्पष्ट से कहा है कि इन पांच प्राणों मैं नहीं हूँ!

और उसने क्या कहा है कि इस स्थूल शरीर का कारण सप्त धातुओं, मैं नहीं हूँ। और पंचकोषों, मैं नहीं हूँ। पंचकोषों मतलब आत्मा के ऊपर रहने वाले पांच आवरणों है।

अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनंदमय, करके पंचकोषों भी मैं नहीं हूँ, को उसने कहा है।

बहुत लोग मरने के बाद समझते हैं कि हम शरीर छोड़ देते हैं और आत्मा ऊपर चली जाती है। लेकिन सबसे पहले भौतिक शरीर को छोड़ते हैं, तीन दिनों के बाद इस प्राणमय शरीर छूट जाती है। इसके बाद में रहने वाले तीन शरीरों, मतलब मनोमय शरीर, बाद में विज्ञानमय शरीर और आनंदमय शरीर। यह तीनों कोषों के साथ, आत्मा ऊपर लोकों में जाती है।

यह सभी सूक्ष्म शरीरों हैं, किसी को दिखती नहीं है। मुझे बहुत लोग पूछते हैं कि, यहां पर जो हम करते हैं दोबारा हम ही अनुभव करते हैं ना ? और आत्मा को कुछ भी नहीं होता है ना ? जब सभी आत्माएं एक ही हैं, तो उनके किए हुए कर्मों उन्हीं के पास कैसे जाते हैं ? करके पूछते हैं।

सभी आत्माएं एक ही हैं लेकिन उनके ऊपर का आवरणों के वजह से उनको पहचानते हैं। वहां पर उस भुवर लोक में कुछ दिनों कुछ समय, और कुछ समय सुवर लोक में रहने के बाद, इस मनोमय कोष

छोड़ देते हैं। पूरी मिलाकर आत्मा के ऊपर यह कोषों रहते हैं। इसीलिए जो भी कर्म करते हैं, उन्हीं के खाता में जमा हो जाते हैं। अगर सोचेंगे कि दूसरों के पापों मुझे मिल जाएगा! और मेरे पुण्य दूसरों को चला जाएगा! आपको चिंता करने की जरूरत नहीं है। ऊपर में ऐसी समस्याएं नहीं रहेंगे।

अगर आप अच्छाई करते हैं, वह आप ही के साथ रहेगा। और अगर बुराई करते हैं, वह भी आप ही के साथ रहेगा। इसीलिए आपने जो भी कुछ किया है आप ही के खाता में चले जाती है। और उन्हीं कर्मों से आप कुछ लेकर दोबारा जन्म लेते हैं। जब जन्म लेते हैं दोबारा इन आवरणों को पहन कर भूमि पर आते हैं, और मां के गर्भ में शरीर में प्रवेश करते हैं। भौतिक शरीर मा तैयार करती है। इस तरह आप जन्म लेते हैं। यहां पर भौतिक शरीर दिखती है, लेकिन दूसरे शरीरों नहीं दिखते हैं। इसीलिए सहज है कि सभी लोग समझते हैं कि और कुछ नहीं है।

लेकिन पत्री जी ने कहा है कि भौतिक शरीर के अलावा, और छे शरीर रहते हैं। लेकिन श्री शंकराचार्य जी ने इस कारण शरीर, महा कारण शरीर तक ही बताए हैं। महा कारण शरीर में यह सभी विभाग हैं। महाकारण शरीर में उस निर्वाणमय शरीर स्थाई तक अगर पहुंचते हैं, तब आपका पहचान खो जाते है। और जब वह भी छोड़ देते हैं, इसी के बाद आपको मोक्ष मिलेगी, और जन्म रहित स्थिति पा सकते हैं।

यही विषय हमें तुलसी दलम -1 पुस्तक में पंच विंषति करके टॉपिक में पत्री जी ने बताया है। तुलसी दलम सामान्य किताब नहीं है। वह अद्भुत ज्ञान देने वाला पुस्तक है। इसीलिए पत्री जी ने कहा है कि, जब भी आप ज्ञानी बनेंगे तभी दूसरे ज्ञानियों को समझ पाते हैं। अगर आप डिग्री में आते हैं, तब पोस्ट ग्रेजुएट स्टूडेंट को आप समझ सकते हैं। अगर आप पांचवी क्लास में रहते हैं, तब पोस्टग्रेजुएट स्टूडेंट को कैसे समझ पाएगा? और जब आप पीजी में आने के बाद ही पीएचडी वाला आपको समझ आएगा। यह भी ऐसा ही है।

इसीलिए यह सभी मैं नहीं हूँ को जानना चाहिए। यह सभी अब है। कुछ समय बाद यह नहीं रहेंगे। जब वह नहीं रहते हैं आप वह कैसे हो सकते हैं ? सिर्फ शाश्वत शिव, मतलब उस परम ब्रह्मं ही आप है। इन सभी से आपको कुछ संबंध नहीं है। जो यह बात समझता है, वह लोग इन सभी चीजों को कम प्रमुखता देते हैं। अपने आप को, मतलब आत्मा को, ज्यादा प्रमुखता देते हैं। ऐसे लोगों ही आखिरी जन्म में आ गए हैं।

अगर आप समझते हैं कि यह अनिवार्य है, तब आपको और कुछ जन्मों लेना पड़ता है। कौन क्या कर सकता है ? अगर आपको वही अच्छा लगता है, वही लेंगे। पत्री जी ने भी यही कहा है कि कोई जल्दी नहीं है। जब तक आप संतुष्ट नहीं रहते हैं, कितने भी जन्म ले लो, पूरी तरह से अनुभव कर लो, मस्ती करो, भूमि पर रहने वाले सारे नव रसों को अनुभव करो।

उन सारे अनुभवों के बाद, तब आपको लगेगा कि इसमें कुछ नहीं है तभी आप लोग इसमें आएंगे। एक प्रकार से कह सकते हैं कि आप सभी लोग उस स्थाई तक पहुंच गए हैं, तभी यहां पर आए हैं।

लेकिन अगर आपको लगता है कि अनिवार्य है, मतलब आप रहना चाहते हैं, अगर आपको वह नहीं है मतलब आप यहां रहने नहीं चाहते हैं। जो रहना चाहता है उसको मोक्ष नहीं मिलेगा, जिसको रहना नहीं चाहता है उन्हीं को मोक्ष मिलता है। इसी को मुमुक्षत्व कहते हैं।

श्री शंकराचार्य जी को अपने माता जी ने कहा था। मेरा बेटा ! आप शादी कर कर, बच्चों पैदा कर कर, सुख रह सकते हैं ना ? क्यों इतना कष्ट ले रहे हो ? तब उसने कहा है की माता जी मुझे कुछ नहीं चाहिए। इन सभी की जरूरत नहीं है, उनके लिए मैं इस भूमि पर नहीं आया हूँ। और बाद में उन्होंने बहुत लोगों को ज्ञान पहुंचाया है ।

और जो अनिवार्य समझते हैं, वह सभी लोग शादी कर लेते हैं। लेकिन जब कष्ट आते हैं कहते हैं कि मुझ पर भगवान को दया नहीं है।

मुझे कम समझ कर बहुत कष्ट दे रहे हैं। और कहते हैं कि कैसे पत्नी दिया है ? या पति दिया है ? करते वक्त अच्छी तरह कर लेते हैं, अनिवार्य समझ कर। तब बाद में भगवान के ऊपर आप छोड़ देते हैं। मतलब जब तक करते हैं आपको मीठा लगता है करने के बाद आपको तीखा लगता है। और कहते हैं कि आप मुझे नहीं चाहिए, चले जाइए। अगर वही लड़कियां है तो कहते हैं कि मैं आपके पास नहीं रहूँगा, मैं अपने माई के पास चले जाऊंगा।

इसीलिए श्री शंकराचार्य जी ने कहा है कि आप यह सभी नहीं है, आप चिदानंद स्वरूप उस परम ब्रह्मं ही आप है। इस विषय को आपको समझना चाहिए। और बाकी सब चीजों को आप समझ कर, उसमें फंस जा रहे हैं। असलियत में आपको उन चीजों से कुछ भी संबंध नहीं है, कहते हैं श्री शंकराचार्य जी ने ।

श्री शंकराचार्य जी द्वारा कहने वाला

तीसरा श्लोक।

मानव के शरीर में जो जो ब्रह्मं नहीं है, उनके बारे में यह छे श्लोकों में श्री शंकराचार्य जी ने विवरण दिया है। उन्हीं को निर्वाण शट्कम कहलाता है। उसमें से अभी तीसरा श्लोक जानते हैं।

श्लोक ।।   न मे द्वेष रागौ न मे लोभ मोहौ
मदो नैव मे नैव मात्सर्य भावः ।
न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्षः
चिदानंद रूपः शिवोहम शिवोहम ।।

तात्पर्य :

या राग द्वेषों, या लोभ मोहों, मैं नहीं हूँ। मद मात्सर्यो मैं नहीं हूँ। यह सभी पांच भौतिक अंत:करणें को संबंध है। मैं सर्वात्मा हूँ, नित्य मुक्त हूँ। इसीलिए मुझे पुरुषार्थों जैसे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, कुछ भी नहीं है। मैं चिदानंद रूप शिव ही हूँ, शिव ही हूँ।

यहां पर राग, द्वेष या लोभ, मोह मैं नहीं हूँ को कहा है। देखिए कि मानव को सहज में यह राग, द्वेष, लोभ, मोह रहते हैं। राग मतलब अनुराग, अपने लोगों पर अनुराग और दूसरे लोग पर द्वेष रहता है। अपना मजहब पर राग, दूसरों पर द्वेष। अपना जाति पर अनुराग दूसरे जातियों पर द्वेष रहता है। अपना देश पर अनुराग और दूसरों पर द्वेष रहता है।

इन प्रकार के राग द्वेष जिसमें रहते हैं, वह लोग मैं ब्रह्मं हूँ को नहीं जान पाएंगे। इनमें से आप अगर कुछ भी प्रदर्शन करते हैं, इसका मतलब ''मैं ब्रह्मं हूँ'' का स्थिति, मतलब ''मैं आत्मा हूँ'' का स्थिति, अभी आप नहीं पहुंचे हैं। बहुत लोग आत्मा स्थिति को प्राप्त करना का मतलब क्या है ? को पूछते हैं। आत्मा की तरह कैसे जीना है ? को पूछते

हैं।

अगर आप एक बार इस निर्वाण शट्कम, मतलब 6 श्लोक को पढ़कर, इन 6 श्लोकों में श्री शंकराचार्य जी ने जैसे बोध किया है, उसने जो जो कहा है कि, मैं नहीं हूँ , अगर इसके तरह जिएंगे, और आप में अगर ऐसे लक्षणों नहीं है, तब आप आत्मा की तरह जी रहे हैं। आत्मा के स्थिति में है! और आप ब्रह्मं बन गए हैं !

बहुत लोग सालों से ध्यान करने के बाद भी, जितना भी ज्ञान प्राप्त किया हो, अगर आपके अंदर इन लक्षणों है, इसका मतलब आप उस स्थाई तक नहीं पहुंचे हैं। आप लोग अभी भी मैं आत्मा हूँ, मतलब मैं ब्रह्म हूँ, मैं शिव हूँ, जाना नहीं है। उस अवगाहन अभी आपके अंदर नहीं है। इसीलिए आपका साधना और ज्ञान और ज्यादा बढ़ाना चाहिए।

बहुत लोग थोड़ा सा अनुभवों पाने से ही अपने आप को बहुत आगे बढ़ गए करके समझते हैं। जब आंखें बंद करते हैं एक पेड़ या कुछ और दिख जाते हैं वह अपने आप को समझते हैं कि तीसरी आंख खुल गई है और यह बात सबको बता देते हैं। यह पागल लोगों भी ऐसे ही समझते हैं कि, वह थर्ड आइ मास्टर बन गया है और उन्हें यह शीर्षक दे देते हैं।

जब कोई उनसे कहते हैं कि आप बहुत आगे बढ़ गए हैं! आप कितने घंटे तक ध्यान करते हैं दिन में ? तब वह थर्ड आइ मास्टर बन गया करके समझते हैं, और ज्यादा दिखावटी शुरू करते हैं। उन्हें यह सारे लक्षणों है कि नहीं, वह नहीं देखते है।

यहां पर अगर आपका थर्ड आइ, मतलब तीसरी आंख, खुल भी गया, तो दूसरों को बताने की क्या जरूरत है ? अगर बताए हैं मतलब उनमें अहंकार है कि सिर्फ उन्हीं को मिला है, और दूसरों को नहीं मिला है। सच्ची में जिसका तीसरी आंख खुल जाती है और अगर वह प्रदर्शन नहीं करते हैं, तब उनमें गर्व नहीं है। याद रखिएगा कि अपने पिछले जन्मों देखे

हैं तो यह बात दूसरों को बताने की क्या जरूरत है ? और बताने से भी क्या फायदा है उनके लिए ?

यह सारे बताने में दूसरों के लिए क्या फायदा है ? सोचिए ?

अगर तीसरी आंख खुल भी गया तब उसको उपयोग कर कर ज्ञान समुपार्जन करना चाहिए। तीसरी आंख मतलब आप जहां बैठे हैं, वहीं से पूरी सृष्टि को, सृष्टि में रहने वाले सारे लोकों को देख सकते हैं, बहुत लोगों को देख सकते हैं। कई सारे विषयों को जान सकते हैं, जो मामूली आंखों को दिखाई नहीं देता है। बहुत सारे ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। उनको पाओ ! दूसरों को बताने से क्या फायदा है ? इसी को गर्व कहलाते हैं।

अगर किसी को तीसरी आंख खुली और आपको नहीं, अगर आपको उनसे जलन होता है मतलब आप आगे नहीं बढ़ा है। किसी को आने से आपको क्या फायदा है ? किसी के पास पैसे है तो आपका क्या है ? किसी को अवार्ड मिला है तो आपका क्या है ? किसी का भवनों या बड़े इमारतें बनने से आपको क्या है ? किसी ने गाड़ी खरीदा तो आपको क्या है ? उनसे आपका क्या लेन देन है ? आप ब्रह्मं है ! समस्त आपके अंदर है। इस सृष्टि में आपके अलावा कुछ भी नहीं है। सब कुछ आप ही से सृजन हुए हैं। अगर आप इस भाव में है कि, उनके पास है और मेरे पास नहीं है, मतलब आपने कुछ सीखा नहीं है। आत्मा स्थिति में आप नहीं है। सिर्फ देह स्थिति में आप हैं।

अगर आप लोभी है मतलब किसी के लिए भी खर्च नहीं करते हैं, ज्ञान पाने वाले किताबें भी नहीं खरीद पाते हैं, किसी को कुछ भी नहीं दे पाते हैं। मोह मतलब व्यामोह। किसी चीज पर व्यामोह, उस पर या इस पर, या सब कुछ पर जो देखते हो उस पर व्यामोह होता है। अगर ऐसे लक्षणों आप में है, मतलब आप अभी भी आत्मा स्थिति में नहीं आए हैं। यह जानना चाहिए। इसका मतलब, मैं ब्रह्मं हूँ, का विषय अभी भी आपके समझ में नहीं आया है ।

निर्वाण शट्कम में श्री शंकराचार्य जी के कहने वाले विषयों में कम से कम एक विषय को आचरण कर रहे हैं कि नहीं? को देखना चाहिए। और अगर आप के अंदर सारे लक्षणों है, तब आप आत्मा जैसे कहां बने हैं? अभी भी आप देह के स्थिति में है। पता नहीं और कितने जन्मों लगेंगे !

इसीलिए यह सभी आपके संबंध नहीं है, आप ब्रह्मं है। यह सभी पांच भौतिक अंत:करण संबंधित है, करके श्री शंकराचार्य जी ने कहा है। पांच भूतों संबंधित इस शरीर का अंत:करण, मतलब मानस, बुद्धि, चित्त और अहंकार, से संबंधित है यह सभी, और कुछ नहीं है।

जब शरीर छोड़ देते हैं यह सभी हवा में मिल जाते हैं। कुछ भी नहीं रहेगा। और वही सब आप प्रदर्शन कर रहे हैं। मतलब आप आत्मा स्थिति अभी तक कहां पहुंचा है? आत्मा की तरह कहां जी रहे हैं? वह सभी मैं नहीं हूँ, मैं सर्वात्मक हूँ, सर्वत्र व्यापित हुए आत्मा हूँ। नित्य मुक्त हूँ, मतलब मुझे मुक्ति की अवसर भी नहीं है।

अगर इन सभी को आप समझेंगे, और यह सभी को आप प्रदर्शन करते हैं, तभी आपको मुक्ति चाहिए। अगर इन सभी से संबंधित नहीं है का स्थिति में आप रहेंगे, तब आपको मुक्ति की क्या जरूरत है?

अगर आप आत्मा हैं तब मुक्ति क्या है? आप तो नित्य मुक्त हैं! यह सभी को नहीं जानकर आप समझ रहे हैं कि मुझे इतना कष्ट है, मुझे ही इतना सारे मुश्किलें हैं, समस्याएं हैं, मुझे झगड़े हैं करके आप दुखी हो रहे हैं।

इस प्रकार पुरुषार्थ जैसे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, यह सभी मुझे कुछ है ही नहीं। उनसे मेरा कोई संबंध नहीं है। मैं चिदानंद रूप शिव हूँ, ब्रह्म हूँ, आत्मा हूँ।

इसीलिए मैं हर वक्त आनंद स्थिति में हूँ, आनंदित हूँ, इसलिए मैं दुख मे रहने वाला नहीं हूँ। इसका मतलब दु:ख के स्थिति में भी आप

आनंद की स्थिति में रहना चाहिए। जब मैं ही ब्रह्म हूँ, मुझे दुख क्या है ? इन सभी से मेरा कोई संबंध क्या है ? जब आप समझते हैं कि यह सभी मेरा है, और यह सब लोग मेरे हैं, तभी दुख पा रहे हैं। असलियत में इनसे आपको कोई संबंध नहीं है।

जिस शरीर के लिए आप इतना तपन हो रहे हैं, तापत्रय हो रहा है, वह शरीर आप है ही नहीं ! शरीर संबंध मानस, बुद्धि, चित्त, अहंकार, यह सभी आप नहीं है। राग, द्वेषों, लाभ, मोह, मद, मात्सर्य, यह सभी आपको कुछ संबंध नहीं है। लेकिन अगर आप प्रदर्शन कर रहे हैं, मतलब आपको अभी तक मालूम नहीं हुआ है। उस स्थिति तक जब आप आएंगे तभी आप बढ़ गए हैं।

इसीलिए श्री शंकराचार्य जी का कहने वाले इन विषयों को जब आप अवगाहन करेंगे, तब आपको खुद समझ में आएगा, कि, आप किस स्थिति में हैं।

श्री शंकराचार्य जी द्वारा कहने वाला

चौथा श्लोक ।

श्लोक।। **न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःखं**
न मंत्रो न तीर्थं न वेदो न यज्ञः ।
अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता
चिदानंद रुपः शिवोहम शिवोहम ।।

तात्पर्यः

मैं न पुण्य हूँ, न पाप हूँ। मैं न सुख हूँ, न दुख हूँ। मैं न मंत्र हूँ, न तीर्थ क्षेत्र हूँ। मैं वेदों नहीं हूँ, या वेद विहित यज्ञ मैं नहीं हूँ। खाने वाला पदार्थ यह नहीं हूँ, और खाने का क्रिया भी, न खाने वाला मैं हूँ। मैं चिदानंद स्वरूप शिव हूँ, शिव हूँ ।

देखिए यहां पर बहुत लोग पाप करते हैं, और कुछ लोग पुण्य भी करते हैं। लेकिन वह सभी ब्रह्मं को संबंध नहीं है। मतलब आत्मा को संबंध नहीं है। जब हम पाप करते हैं दुख मिलता है, और पुण्य करने से भोग मिलता है। मतलब मानव लोग अनुभव करने वाला सुख या दुख आत्मा को संबंध नहीं है। आप जितना भी दुख अनुभव करो उन सभी, वह नहीं है।

इसीलिए भागवत गीता में, और पत्री जी ने भी क्या कहा है ? कि आप को पाप कर्म भी नहीं चाहिए और पुण्य कर्म भी जरूरत नहीं है। उनको छोड़कर आत्मा कर्मों को करने को कहते हैं। वही आपको मोक्ष दिलाते हैं। मतलब उस ब्रह्मं स्थिति तक पहुंचाते हैं। मोक्ष का मतलब देह स्थिति से, मनोस्थिति से, बुद्धि स्थिति से, पार कर आत्मा स्थिति तक, मतलब ब्रह्मं स्थिति तक पहुंचना है। वही मोक्ष है। तभी ब्रह्मं जैसे बनेंगे। मैं ही ब्रह्मं हूँ का स्थिति में रहते हैं।

यह सभी आत्मा संबंधित नहीं है। इस शरीर से करने वाले पुण्य या पाप, या सुख या दुख, यह सभी मैं नहीं हूँ, को कहा है। भोगों को इकट्ठे कर कर सुख पाते हैं। एसी में रहकर, गाड़ियों में घूम कर, हर दिन अच्छा सा भोजन खाकर, कई सारे सुंदर दृश्य देखते हैं, मधुर संगीत सुनते हैं, और समझते हैं कि मैं सुख पा रहा हूँ।

लेकिन जब आप मैं ब्रह्मं हूँ, मैं आत्मा हूँ, का स्थिति पहुंचते हैं, यह सभी से संबंध नहीं रखते हैं, का विषय आपको समझ आता है। और उनके लिए आप दौड़ते नहीं हैं। और पाने का प्रयत्न भी नहीं करेंगे, और उनके ना रहने पर दुख नहीं होते हैं। अगर है तो अनुभव कर लेते हैं, नहीं है तो चुप रहते हैं। यह सारे विषयों पत्री जी द्वारा हम जान सकते हैं।

पत्री जी ने क्या कहा है कि, जब है तो अनुभव कीजिएगा, अगर नहीं है तो न होने का भाव नहीं रखना है। और उसने इस आना-पाना सती मतलब ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान सबको बोध करने के लिए बहुत सारे गांव गए हैं। उनका अपना उद्योग भी छोड़ दिया है। और उनके पैसे कमाने का वह एक मात्र तरीका था। कभी भी उनके जेब में पैसे नहीं रहते थे। ऐसे ही उन्होंने रेल का जनरल बोगी में, और बस में खड़े होकर भी, बहुत सारे गांव घूमते रहते थे।

वह कहते थे कि कभी-कभी एक जगह पर उनको चाय पीने का मन करता था, लेकिन उनके पास पैसे नहीं रहता था। और इसलिए नहीं पीता था। और जिसको यह ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान पर आसक्ति दिखाते थे, उनको सिखाने के लिए वह प्रयत्न करते थे। और जिनके मन नहीं लगता है उनके बारे में वह सोचते नहीं थे, बस छोड़ देते थे उनको।

उन लोगों को जिसका आसक्ति था, ऐसे लोगों के पास कभी-कभी पैसे भी नहीं होते थे। और घरों में इतना सुविधाएं उपलब्ध नहीं रहते थे। और पत्री जी ने कभी भी नहीं देखा है कि वह उनको कुछ सुविधाएं दे सकता है या नहीं। वहां जैसे था वैसे ही रहते थे। बड़े-बड़े काट दिया

नहीं तो, कभी एक कंबल ओढ़ कर सो जाते थे, नीचे सो जाते थे। वह लोग जो दिया था वही खाते थे।

लेकिन बाद में इस ध्यान का महत्व समझ कर, बहुत लोग इस मार्ग में आए हैं। धीरे-धीरे यह ध्यानी लोग बढ़ने से उनको थोड़ा-थोड़ा सुविधाएं बढ़ने लगा। जब मैं 2002 नवंबर में इस ध्यान में आया था, बस में घूमते थे और उस समय उस स्थिति को देखकर उसको कुछ फील नहीं हुआ है।

उसको सिर्फ जाना था, कैसे भी, कहीं भी! वह सुविधाओं को नहीं देखते थे। अंत में तो वह हवाई जहाज में भी घूमते थे। उस स्थिति तक पहुंचे हैं कि बड़े-बड़े गाड़ियों में घूमते थे। इसीलिए कहते हैं कि जब है उसको अनुभव करो, जब नहीं है यह मत समझना मेरे पास नहीं है।

जब आप आत्म स्थिति में पहुंच जाते हैं, और उस अनुभूति पाते हैं, इन सभी चीजों पर ध्यान नहीं रखते हो। श्री शंकराचार्य जी ने जैसे कहा है कि ब्रह्मं स्थिति, मतलब आप ही ब्रह्मं बन जाने कि स्थिति है। पुण्य भी या पाप भी आपके संबंध नहीं है। सुख भी या दुख भी मैं नहीं हूँ और उस पर दृष्टि नहीं रखते हो। अगर है तो सही, नहीं भी है तो भी सही।

श्री शंकराचार्य जी ने और क्या कहा है ? कि न मंत्र, न तीर्थ क्षेत्र, मैं नहीं हूँ। लेकिन कुछ लोग मंत्र जाप करते हैं, और कुछ लोग गुरु के पास मंत्र उपदेश पाते हैं। लेकिन वह सभी ब्रह्मं को संबंधित नहीं है। इसीलिए पत्री जी कहते हैं कि, मंत्र और जाप नहीं चाहिए। आपको जो करना है वह ''आना-पाना सती'' है, मतलब ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान है । सिर्फ वही करना है। इस मंत्र से आपको संबंध नहीं है, श्री शंकराचार्य जी ने कहा है।

ऐसे ही बहुत लोग भगवान को दर्शन करने के लिए तीर्थ स्थल जाते हैं । और श्री शंकराचार्य जी ने कहा है कि मैं तीर्थ स्थल भी नहीं हूँ। वहां पर जाकर स्नान करते हैं, मंदिर में दर्शन करते हैं, लेकिन वह सभी मैं नहीं हूँ, को कहा है।

ऐसे ही वेदों, या वेद विहित यज्ञ, मैं नहीं हूँ, उसने कहा है। बहुत लोग समझते हैं कि इन वेदों महान है, और उनको महान पुण्य कर्म मानते हैं। लेकिन यह पुण्य कर्म है भी तो, लेकिन वह काम्य कर्म है। किसी कामना से करते हैं। अगर सोचेंगे तो, उस परम ब्रह्मं के लिए कुछ कामना ही नहीं होते हैं। उनके पास क्या नहीं है ? सब कुछ उसी का है ! सब कुछ उसी ने सृष्टि किया है। है ना ? इसीलिए श्री शंकराचार्य जी कहते हैं कि उस कामनाओं से मेरा कुछ भी संबंध नहीं है, और मैं नहीं हूँ।

उसी प्रकार खाने वाले चीजों से, पदार्थ से, वह जो कुछ भी पदार्थ हो, मैं वह नहीं हूँ, को कहा है। इसीलिए श्री रामना महर्षी जी ने अपना शरीर को स्वस्थ रखने के लिए जो कुछ मिलता था उसी को खाता था। वह कभी नहीं कहा है कि वह मुझे चाहिए, ऐसी इच्छा नहीं रखता था। खाने का क्रिया या उसे खाने वाला, मैं नहीं हूँ। मैं चिदानंद रूप शिव ही हूँ, शिव ही हूँ, को कहा है।

हम देखते हैं कि इस दुनिया में भगवान को नैवेद्य समर्पित करते हैं। लेकिन श्री शंकराचार्य जी ने कहा है कि वह खाने वाला मैं नहीं हूँ।

मैं ब्रह्मं हूँ, आत्मा हूँ, और मुझे किसी चीज से संबंध नहीं है। बहुत लोग एक प्रश्न पूछते हैं कि हमारे शरीर में ही आत्मा है ना ? भगवान रहता है ना ? हम जो भी अनुभव कर रहे हैं, क्या उससे आत्मा को संबंध नहीं है ? वह कुछ भी आत्मा संबंध नहीं है। यह सभी मैं समझ कर, आप कर रहे हैं। आप अपने मानस को ही मैं समझ रहे हो, क्योंकि उस मानस ही इस शरीर और इंद्रियों को चलाता है। इसलिए सब कुछ अनुभव कर रही है मानस, करवा रही है मानस, दुख हो रही है मानस, संतोष हो रही है मानस, कुछ भी करो वह मानस ही है।

इसीलिए यह सब कुछ आत्मा को संबंध नहीं है। आपने पाप किया है, उस पाप का फल आप ही अनुभव करेंगे, उससे आत्मा को संबंध नहीं है। आप नरक अनुभव करेंगे। उस नर्क से आत्मा को संबंध

नहीं है। आप मैं मैं करते–करते कर रहे हो। आप असली मैं को छोड़कर, जो अंत में बची हुई चीज को मैं, कह रहे हैं। उस बचे हुए चीज को यह सभी संबंध है, असली मैं, मतलब, आत्मा को कुछ भी संबंधित नहीं है।

इसलिए आपके जीवन में जो कुछ हो रहा है, आत्मा, मतलब उस ब्रह्मं, साक्षी बनकर देखती है। लेकिन उन सभी से कुछ स्पंदन नहीं रहेगा और प्रतिचर्य कुछ नहीं रहेगा। ना उसको खातिर करता है। सिर्फ देखती रहती है। यह बात आपको समझना चाहिए।

उस स्थिति तक अगर आप पहुंचते हैं, तब यह सभी से मुझे संबंध नहीं है, का विषय समझेंगे। तब यह आशा नहीं रहेगा, द्वेष नहीं रहेगा, क्रोध नहीं रहेगा, ईर्ष्या नहीं रहेगा, ममकार नहीं रहेगा। ऐसे कुछ भी, थोड़ा सा भी अगर आप में है, मतलब आप अभी तक आत्मा स्थिति, मतलब ब्रह्मं स्थिति को नहीं पहुंचा है।

आप निर्वाण शट्कम को समझ कर, उस स्थिति में अगर जी सकते हैं, आप आत्मा स्थिति में जीना बराबर है। और सुबह से शाम तक आप बहुत करते हैं, और श्री शंकराचार्य जी कह रहे हैं कि उनमें से मैं कुछ भी नहीं हूँ। अगर मैं समझ कर कर रहे हैं, एक तरह होगा। और मैं नहीं, समझ कर करेंगे तो दूसरी तरह रहेगा। इसीलिए हमारा साधना उस स्थिति तक पहुंचना चाहिए, तभी आप परिपूर्ण बनेंगे।

श्री शंकराचार्य जी द्वारा कहने वाला

पांचवा श्लोक ।

ब्रह्मं के लक्षणों को कई प्रकार के और कई कोणों से निर्वाण शट्कम में श्री शंकराचार्य जी ने विवरण दिया है। उसमें अब पांचवा श्लोक के बारे में जानते हैं।

श्लोकः **न मृत्यु र्न शंका न में जाति भेदः**
पितो नैव मे नैव माता च जन्म ।।
न बंधु र्न मित्रं गुरु नैंव शिष्यः
चिदानंद रूपः शिवोहम शिवोहम ।।

तात्पर्यः

मुझे (आत्मा) को मृत्यु नहीं है। भय नहीं है। स्त्री, या पुरुष, या नपुंसक, जाति भेद नहीं है। मुझे पैदाइश नहीं है। इसीलिए मुझे न माता है, न पिता है। मुझे न बंधु है, न मित्र है, न गुरु है, न शिष्य है। मैं चिदानंद रूप शिव हूँ, मैं शिव ही हूँ । इस श्लोक में ब्रह्मं के बारे में, उसने ऐसा विवरण दिया है।

हम सब उस ब्रह्मं स्थिति पाने के लिए कृषि कर रहे हैं, कष्ट कर रहे हैं, तीव्र साधना कर रहे हैं। एक प्रकार से सिर्फ अवसरों तक सीमित रहकर पूरा समय इसी के लिए उपयोग कर रहे हैं। तब इतना कष्ट करते हुए, और इतना साधना करते हुए, इतना ज्ञान पाते हुए, किस स्थिति में है हम ? कितना आगे बड़े हैं हम ? आत्मा स्थिति पा सकते हैं या नहीं ? यह सभी प्रश्नों का उत्तर जानने के लिए ही यह निर्वाण शट्कम। नहीं तो कुछ साधना करके इतने सालों से कर रहे हैं, और समझेंगे कि बहुत कुछ आगे बढ़ गए हैं।

इस श्लोक में श्री शंकराचार्य जी ने क्या कहा है ? मुझे मौत नहीं है, मुझे भय नहीं है। अगर आप आत्मा स्थिति को पहुंचते हैं, सबसे पहले

आपको यही बात समझना चाहिए। मुझे मौत नहीं है का विषय जब आपको अच्छी तरह से समझ आएगा तब आप मौत से डरते नहीं है। और उनके लिए हर समय तैयार रहते हैं। मौत, मतलब सिर्फ शरीर को छोड़ने का विषय आप समझेंगे ।

प्रकृति में एक व्यवस्था है, वह क्या है कि, इस बूढ़ा शरीर को इस्तेमाल करने के बाद अगर छोड़ेंगे, तब नया शरीर मिलता है। और दोबारा हर प्रकार के नैपुन्य के साथ नया शरीर आप उपयोग करेंगे। ज्ञान और ज्यादा बढ़ाएंगे । इसीलिए मौत भी लाभ ही है, कुछ नष्ट नहीं है। अगर लाभ ही मिल रहा है हमें क्यों डरना है ?

एक ही विषय आप याद रखिए। अगर आप अपने आप को शरीर समझेंगे तब मौत से डरते हैं। अगर आप आत्मा है का विषय पूरी तरह से समझा है, तब इस मौत से नहीं डरते हैं। इसीलिए श्री कृष्णा ने भी कहा है कि जो भी मरने वाला है, या जो मरा हुआ है, उनके बारे में जो दुखित नहीं रहता है, वही पंडित है। मतलब ज्ञान में पूरी तरह पके हुए हैं। यह बात स्पष्ट से कहा है।

इसीलिए यह विषय जानना चाहिए। तब आपको भय नहीं रहेगा और किसी प्रकार के भय नहीं रहेगा। जीवन में संपत्ति मिला या खो गए हैं, जो कुछ चाहते हैं वह मिला या नहीं मिला, आपके काम में विजय हुआ या नहीं पाया, आपको कभी भी भय नहीं रहेगा। जो कुछ होना है वह हो गया है। इसके लिए भय क्यों ? जो कुछ हो रहा है, उनसे मुझे कुछ संबंध नहीं है। मैं चिदानंद रूप शिव हूँ, मतलब ब्रह्मं हूँ, आत्मा हूँ, का विषय जानना चाहिए।

इसीलिए हर वक्त आपको मैं शरीर नहीं हूँ, आत्मा हूँ का विषय, अगर याद रखेंगे, वहीं के वहीं आधा दुख दूर हो जाएगा। नहीं तो हर एक छोटी चीज के लिए आप दुखित रहेंगे। वह क्यों हुआ ? यह क्यों हुआ ? इसका कारण क्या है ? उसका कारण क्या है ? करके बहुत दुखी रहेंगे।

इसीलिए जब आप किसी तरह के भय बिना रह सकते हैं, जी सकते हैं, तभी आप उस स्थिति तक पहुंचे हैं।

आत्मा को या स्त्री, या पुरुष, या नपुंसक करके जाति भेद नहीं है। अगर आप शरीर संबंध सोचेंगे तब यह सारे भेद दिखते हैं। अगर आप आत्मा है करके जानेंगे, तब आत्मा स्त्री नहीं होता है, पुरुष नहीं होता है, यह सभी भूमि पर आने के लिए लेने वाला शरीर है। इसके अलावा आप न स्त्री, हो न पुरुष हो, न नपुंसक है। भूमि पर आप अपना काम पूरी करने के बाद आप शरीर छोड़ देते हैं।

कुछ जन्मों स्त्री, और कुछ जन्मों पुरुष करके, कुछ जन्मों हिंदू, कुछ जन्मों मुसलमान, आदि कुछ और। उस तरह कई प्रकार के जातियों में जन्म लेते हैं। यह सभी शारीरिक संबंध है। लेकिन मैं, जो आत्मा हूँ, उनको कुछ संबंध नहीं है।

उतना ही नहीं एक और विषय जानेंगे। आत्मा जो मैं हूँ, उसका ना कुछ पैदाइश है ना मौत है। जब मुझे पैदाइश नहीं है, तब मेरी मां कौन है? पिता कौन है? बंधु कौन है? मित्र कौन है? इसीलिए जब तक शारीरिक स्थिति में रहते हैं, यह सभी रहेंगे। लेकिन जब आप, मैं आत्मा हूँ, का अवगाहन रहता है तब यह सभी नहीं रहेंगे।

मुझे न मित्रों है, न बंधु गण है, न गुरु है, न शिष्य है, गुरु कोई नहीं है, का विषय के बारे में एक छोटा विषय बताता हूँ। एक गांव में एक गुरु के पास कुछ शिष्य लोग विद्या पढ़ते थे। उसमें एक शिष्य ने कहा है कि कुछ दिनों मुझे सिखाने के बाद मतलब 2 साल या 3 साल के बाद गुरु के पास जाकर कहा कि मैं वेदों और वेदंगों आपके द्वारा सीखा हूँ, इसीलिए आपको धन्यवाद कहकर, उसने कहा कि आप का इजाज़त है तो, मैं जा रहा हूँ।

तब गुरु ने कहा है कहां खत्म हुआ है? और बहुत कुछ है सीखने के लिए! एक और साल उस गुरु के पास रहकर बहुत विषयों

सीखा है। तब दोबारा उसने कहा है कि मैं सीख लिया हूँ और उसके बाद क्या रखा है और मैं जा रहा हूँ। तब गुरु ने कहा है कि अभी कहां खत्म हुआ है ? आपको पूरी तरह जानना चाहिए, सीखना चाहिए! और कुछ साल सीखो! इसी प्रकार एक और साल रहने के बाद उसने सोचा कि और सीखने के लिए क्या रहेगा, करके गुरु जी के पास जाकर कहता है कि मैं जा रहा हूँ। तब गुरुजी दोबारा कहा है कि अभी खत्म नहीं हुआ है, आपको सीखने वाला विषय बहुत कुछ है।

फिर एक और साल बाद उस शिष्य ने क्या किया है, कि उस गुरु को बिना बताकर चले गए हैं। तब गुरु जी को समझ आया है कि अब यह परिपूर्ण समझा है, सीखा है की समस्त मैं ही हूँ। सब कुछ मैं ही हूँ ।मेरे अलावा कुछ नहीं है। मुझे कुछ सीखने के लिए भी नहीं है, का स्थाई तक पहुंचा है। तभी गुरु को भी बिना बताकर वह चले गए हैं।

वहां पर आप उस स्थिति तक पहुंचेंगे तो, आपको समझ आएगा कि हमें न गुरु है न शिष्य है। समझिए कि ब्रह्मं को दूसरा गुरु होता है क्या ? सोचिए ब्रह्मं को क्या नहीं जानता है ? और शिष्याओं भी उन्हीं से पैदाइश हुए हैं! उन्हीं के अंश हैं! मतलब उनका समान है। उनके तरह ही है, तब शिष्य कहां है ?

इसीलिए श्री शंकराचार्य जी ने इस विषय को कहा है। मुझे ना गुरु है ना शिष्य है, कारण यही है। क्या है ? कि मैं चिदानंद रूप शिव हूँ, मतलब ब्रह्मं हूँ। जब उस तिथि तक आप आएंगे वह लोग पूर्ण आत्मा स्थाई तक पहुंचे हैं। और उनके जन्मों नहीं होंगे।

इसीलिए इन लक्षणों जिसमें रहते हैं, वह सभी परिपूर्ण स्थिति तक पहुंचे हैं। उस स्थिति तक बढ़ गए हैं। तब आप मौत से डरते नहीं है। आप अगर डर रहे हैं आपको और आगे बढ़ना चाहिए। अगर आपके भाव में वह स्त्री है, मैं पुरुष हूँ, मैं नपुंसक हूँ, रहेंगे तब आप अभी भी आगे नहीं बड़े हैं। विकसित नहीं हुए हैं।

इस शरीर ज्ञान बढ़ाने के लिए ही दिया गया है। इसलिए अगर आप उस शरीर को ही मैं समझेंगे, और इसी के लिए कृषि करते हैं, कष्ट करते हैं, समझिए आप कितना अज्ञानता में है! सोचिए! अगर आप इस शरीर को मैं समझते हैं, दुख रहेगा। और कहते हैं कि मुझे ऐसा पति मिला, ऐसे बच्चे मिले हैं, नहीं तो मुझे ऐसी पत्नी मिला, और मुझे यह समस्याएं हैं। यह सभी अगर आप कहेंगे तो आप अभी आगे नहीं बड़े हैं।

कोई भी उस स्थिति तक पहुंचना चाहिए। यहां पर ऐसी भावनाओं मानस ही करता रहता है। जब तक मनस रहता है, किसी को भी यह भावनाएं रहते हैं। जब आप तीव्र साधना करते रहेंगे, अंत में इस मनस शून्य हो जाता है। जब इस मानस नहीं रहता है, वहां पर यह सभी ऑटोमेटिक दूर हो जाते हैं, अदृश्य हो जाते हैं। इसीलिए जब तक मानस है, वह मनुष्य है। जब वह मनस शून्य हो जाता है, वह माधव बन जाते हैं।

उस स्थिति को जितना जल्दी आप पहुंच सकते हैं, उतना जन्म आपको कम हो जाएंगे और उतना ही दुख निकल जाएंगे। तब कुछ भी समस्याएं नहीं रहेंगे। कुछ भी बाधाएं नहीं रहेंगे। जब तक मानस है तभी यह सभी रहेंगे।

ध्यान में तीन स्थितियों रहते हैं। प्राथमिक स्थिति में चंचल मनस निश्चल होता है। दूसरा स्थिति में निश्चल मनस निर्मल होता है, मतलब शुद्ध होता है। और ज्यादा साधना करने से परिशुद्ध होता है। और महापरि शुद्ध होता है। मनस का प्रमुखता घटता रहता है। और धीरे-धीरे साधना अगर करते रहेंगे, तब इस परिशुद्ध मनस शून्य बन जाता है। और ऐसे शून्य और परिशून्य मानस अंत में महापरिशून्य हो जाता है।

तब आप जिसको महान समझते हैं, देवता समझते हैं, उसके स्थिति तक आप पहुंच जाते हैं।

इसीलिए उस स्थिति को पहुंचने तक, तीव्र साधना करना चाहिए। अब आप लोग संसार में रहकर उस स्थिति को पाने के लिए कृषि कर रहे

हैं। इसीलिए आपकी जरूरतों तक सीमित रहकर, खाली समय को वृदा नहीं कर कर, पत्री जी का कहने वाले साधना को, स्वाध्याय को, सांगत्य को, सेवा के लिए उपयोग कर कर, उस स्थिति तक पहुंचने का प्रयत्न करना चाहिए।

इसीलिए आप इस जन्म में जो कृषि करते हैं, उसके आधारित अगले जन्म में आखिरी जन्म को करने का अवसर मिल सकता है। आपके कृषि, और ज्यादा रहने से इसी जन्म को आखिरी जन्म बना सकते हैं। संसार में रहने से, आप यह मत सोचो कि यह संभव नहीं है। इसकेलिए आप को आहार नियमों को पालन करते हुए, तीव्र साधना करना चाहिए।

जब श्री रमण महर्षि ने सब कुछ छोड़कर एक जगह बैठने से सब लोग उसको पागल समझते थे। वह क्या जीवन है ? समझते थे। अंत में वह कितना महान स्थिति तक पहुंच गए हैं !

और पत्री जी भी हम जैसे लोगों को इस ज्ञान और इस सत्य बताने के लिए एक प्रणालिका के साथ भूमि पर आए हैं। इसीलिए गांव-गांव घूम कर, कई सारे देशों में घूम कर, इस सत्य को पहुंचाया है। इसीलिए सभी लोग जान लिए हैं। हर एक का प्रणालीका अलग प्रकार के रहते हैं।

जब आप इसी में लीन होते जाएंगे तब आपको बिना मालूम ही आपके अंदर आसक्ती बढ़ती है। आपके अंदर कई बदलाव आते हैं। हर समय लोग ऐसे ही नहीं रहते हैं। जो भी काम कर रहे हैं, आसक्ति तो रहना चाहिए, बस ।

श्री शंकराचार्य जी द्वारा कहने वाला

छटवा श्लोक।

ब्रह्मं का लक्षणों कई प्रकार के हैं, और कई कोणों में निर्वाण शट्कम में श्री शंकराचार्य जी ने विवरण दिया है। और उसमें से अभी छटवा श्लोक के बारे में जानते हैं।

श्लोकः अहं निर्विकल्पो निराकार रूपो
विभुत्वाच्छ सर्वत्र सर्वेंद्रियाणाम ।
न चा संगतं नैव मुक्ति र्न मेमः
चिदानंद रूपः शिवोहम शिवोहम ।।

तात्पर्यः

मैं, बिना कोई विशेषताएं हूँ, निराकार हूँ, व्यापक हूँ, मैं सर्व देशों में, और सर्व काल में, और सर्व वस्तुओं में रहने वाला हूँ। इसीलिए मेरा स्वरूप निखिलेंद्रियों को संगत में ही रहने वाला हूँ। मैं मुक्त नहीं हूँ, बद्ध नहीं हूँ, मैं संगम रहने वाला नहीं हूँ, मैं केवल ज्ञान आनंदमय आत्मा हूँ। चिदानंद स्वरूप शिव ही हूँ, शिव ही हूँ मैं।

मेरा कुछ भी विशेषताएं नहीं है मतलब मेरे में कुछ भी प्रत्येकताए नहीं है। निराकार हूँ मतलब कोई आकार नहीं है। मैं व्यापक हूँ मतलब हर जगह व्यापित हूँ। मैं सर्व देशों में हूँ, मतलब हर एक देश में, सर्वकाल मतलब भूत, भविष्य, वर्तमान कालों में, सर्व वस्तुओं में भी, मतलब सृष्टि में जो कुछ भी है उन सभी में, मैं हूँ। मतलब 84 लाख जीवों में ही नहीं, चरों और अचरों में ही नहीं, सब कुछ में मैं हूँ।

इसलिए मेरा स्वरूप निखिल इंद्रियों को, सबको, सबसे संगम में रहता ही हूँ, मतलब जानता ही रहता हूँ। यहां पर श्री शंकराचार्य जी ने ब्रह्मं के बारे में नहीं बता रहे हैं। उसने मैं का शब्द बता रहे हैं। यहां पर आप

देखिए। आप इस शरीर को मैं समझते हो। लेकिन यह शरीर मैं नहीं हूँ। इस जाति को मैं समझ रहे हो। इस प्रांत को मैं समझ रहे हो। इस मजहब को मैं समझ रहे हो। इन सभी से आपको कुछ भी संबंध नहीं है।

आपका एक प्रांत नहीं है, आप हर जगह हैं। और आप किसी एक जाति संबंध नहीं है, हर एक से संबंधित रहने वाला है। एक मजहब से संबंधित नहीं है, सारे मजहबों आप के ही हैं। पत्री जी ने भी यही कहा है।

अभी मैं हिंदू मजहब में एक ब्राह्मण परिवार में जन्म लिया हूँ, मतलब ब्राह्मण के परिवार में शरीर लिया हूँ। मैं ब्राह्मण हूँ का समझते हो आप लोग। लेकिन इससे पहले जन्म में मैं एक मुस्लिम सूफी मास्टर था, हैदराबाद में जन्म लिया हूँ। उससे पहले अमेरिका में एक ईसाई धर्म में बेंजामिन फ्रैंकलिन का जन्म लिया हूँ। इससे पहले बुद्धा के पास आनंद बुद्धा था। अभी बताइए कि मैं किस जाति का हूँ, आप ही बताइए करके पूछा था।

इसीलिए मैं किसी मजहब का नहीं हूँ और किसी मजहब से मेरा संबंध नहीं है। मैं आत्मा हूँ, मैं ब्रह्म हूँ, मैं सर्व वस्तुओं में हूँ, सर्व देशों में हूँ, सर्व कालों में भी हूँ, न केवल एक हिंदू के जन्म में रहा, एक मुस्लिम के जन्म में रहा। ऐसे ही नहीं रहने वाला हूँ, हर समय रहूँगा, हर जगह रहूँगा, और हर चीज में रहूँगा।

जो भी आप अभी समझ रहे हो, वह सभी मैं नहीं हूँ। अभी देखिए दुनिया में एक प्रांत में युद्ध हो रहा है, एक के ऊपर बंब फोड़ रहे हैं, टेक्नोलॉजी बढ़ गया है, और बड़े-बड़े अस्त्रों को तैयार कर कर एक के ऊपर एक छोड़कर बर्बाद कर रहे हैं। इसका मुख्य कारण क्या है कि वह देश मेरा नहीं है, वह लोग अलग है, यह लोग अलग हैं, उनका मजहब अलग है, मेरा मजहब अलग है, करके द्वेष को और शत्रुत्व भाव को बढ़ा रहे हैं। और तभी ऐसे युद्धों कर कर बहुत नष्ट हो रहे हैं।

कई सारे करोड़ों खर्च कर कर विकसित करने के बाद, देश को सर्वनाश कर रहे हैं। इसका मुख्य कारण क्या है कि, श्री शंकराचार्य जी का कहने वाला इसी सत्य को न जानना। सभी कुछ एक ही है, अलग-अलग कुछ नहीं है। असलियत में परम ब्रह्मं के अलावा और कुछ नहीं है, सब कुछ इस के विभागों हैं।

सोने का वस्तुओं कई प्रकार के होते हैं। उनके कई नाम होते हैं और कई आकार होते हैं। और उनके कई प्रकार के उपयोग होते हैं। लेकिन सब कुछ सोने से ही आते हैं, सोने से ही बनाए हुए हैं। और दोबारा जब इन सभी वस्तुओं को अगर पिघलाते हैं, तब सोना ही हो जाता है। तब कई प्रकार के वस्तुओं नहीं है, सब कुछ सोने का ही है, सोने से ही निकला है।

इसी प्रकार यह सारे जीवों, और मानव, और इतना सारा प्रपंच, इतने सारे देश भी इस ब्रह्मं से सृजन हुए हैं। लेकिन अंत में यह सभी अदृश्य होकर ब्रह्मं में लीन हो जाते हैं। आप एक विषय याद रखिए, जो भी सृजन हुआ है वह सभी कुछ ही समय के लिए रहते हैं, और बाद में अदृश्य हो जाते हैं। अदृश्य नहीं होने वाला ही रहने वाला समान है। लेकिन अदृश्य हो जाते हैं। बहुत कुछ बदलाव होते हैं। और सब लोग हम रह जाएंगे के भाव में इस द्वेश और लड़ाई, और एक दूसरे को विनाश करने का काम कर रहे हैं।

इसीलिए पत्री जी ने कहा है कि हर एक को ज्ञानी बनना चाहिए। उस ज्ञान प्राप्त करने के लिए "श्वास पर ध्यास" ध्यान करना चाहिए। उस ज्ञान को पूरा दुनिया में सबको बोध किया है। हर एक को अपनी अज्ञानता को निकालने को कहा है। दूसरे लोग अलग हैं समझना ही अज्ञानता है। सभी एक है कि स्थिति पहुंचना ही ज्ञान है । अगर आप में थोड़ा सा भी अलगावाद का भाव है, मतलब आप अभी भी अज्ञानता में हैं।

आप समझते होंगे कि नष्ट क्या है अगर अज्ञानी रहेंगे तो! कोई

नष्ट नहीं है। आपको और ज्यादा जन्म लेने पड़ेंगे, बस उतना ही। अगर समझेंगे कि लेने से क्या नष्ट है, उनसे कोई नष्ट नहीं है। लेकिन आपको जब भी दुख आता है, या कष्ट आता है, या समस्या आता है, आप बड़ा दुखित रहते हैं और पूछते हैं कि मुझे क्यों कष्ट मिला है ? मैं अलग हूँ और वह मुर्गा अलग है करके उसको खाया है। तभी यह मुश्किलें आए हैं। उनका फल रोग और मुश्किलें आते हैं, बाद में आप दुखित रहते हैं। तब आप सोचेंगे कि यह जीवन किस लिए है।

जो भी सब एक ही है को समझता है, और उस स्थिति तक पहुंचते हैं, सबको गौरव करते हैं, सबके साथ मैत्री रखते हैं, और आनंद में जी सकते हैं। अंत में ज्ञान प्राप्त कर कर जन्म रहित स्थिति को पहुंचते हैं।

आप अभी नहीं तो 50 जन्म लेने के बाद, या 200 जन्मों लेने के बाद अंत में आपको यही चीज प्राप्त करना है, और यही विषय जानना चाहिए। जो कुछ मैं मैं करके बता रहे हो, सोच रहे हो, वह सभी मैं नहीं हूँ का विषय, जब तक नहीं जानते हैं, आप ऐसे जन्म लेते ही रहेंगे, और दुख होते ही रहेंगे। इसीलिए यह सभी मैं नहीं हूँ, मैं आत्मा हूँ, मैं शिव हूँ, मैं ब्रह्मं हूँ, का विषय जानने को कहते हैं, श्री शंकराचार्य जी ने।

इसीलिए इस निर्वाण शट्कम द्वारा मुक्ति का स्थिति पहुंचने वाले कैसे रहते हैं ? इस स्थिति में रहते हैं कि मैं किसी भी विशेषता वाला नहीं हूँ, निराकार हूँ, सर्वव्यापित हूँ, सर्व कार्लो और सर्व वस्तुओं में हूँ, सर्व देशों में हूँ, का विषय जानते हैं। मतलब सिर्फ ज्ञानानंदमय आत्मा हूँ, और चिदानंद स्वरूप शिव हूँ। मैं मतलब, मैं ब्रह्म हूँ का विषय जानेंगे। ऐसे जानने वाला व्यक्ति का प्रवर्तन भी उसी प्रकार रहता है, और बदल जाता है।

पत्री जी ने एक बार कहा है। जिसको भी देखें आपको समझना है कि वह मैं ही हूँ। यह भाव आप में आना है। देखने में अलग रहते हैं, लेकिन यह भाव रहना चाहिए। मैं ही इन्ही इतने रूपों में हूँ का विषय

जानना चाहिए। किसी को दुख नहीं देता है, किसी को गाली नहीं देता है, अपमान नहीं करता है, किसी को कुछ भी करो, मतलब अपने आप को वह कर रहे हैं का विषय समझता है। इसीलिए ऐसे काम कुछ नहीं करता है। इसी प्रकार किसी जानवर को मारने या हिंसा करना या खाना, अपने आप के ऊपर हिंसा करने का समान है। इसीलिए किसी भी जानवर को या पक्षी को मारना या हिंसा नहीं करना है, या खाना नहीं चाहिए।

और ऊपर से उनका प्रेम करता है, रक्षा करता है, स्नेह करता है, मैत्री करता है। सब कुछ और सभी लोगों को अपना सामान देखता है। यहां पर एक संदेह आता है। अगर सब कुछ एक ही है और सभी मैं ही हूँ, मेरे पत्नी से मुझे संसार में रहना है या नहीं रहना है का विषय पूछते हैं। ऐसे ही कुछ लोग मेरा काम उनसे करवाना है या नहीं भी पूछते हैं।

तब वशिष्ठ महर्षि ने क्या बोध किया है? कर्मों में द्वैत, और भावों में अद्वैत, को आश्रय करना चाहिए । कर्मों में मतलब आपको जो काम करना है, करते समय आपको वह मेरा पति है, वह मेरी पत्नी है का भाव से काम करना चाहिए। अगर पत्नी है,पत्नी जैसा रहकर अपना धर्म को निभाना है, पति है तो पति जैसा रहना है और अपना धर्म निभाना है। मानव को मानव जैसे ही रहना चाहिए। अगर आप कर्मचारियों को काम देना बंद करेंगे तो, उनसे मैं क्यों काम करवाना है को सोचेंगे, तब वह कैसे जिएगा और उनका अनुभव कैसे पाएंगे? और वह कैसे अपना पाठों सीखेंगे?

इसीलिए सभी लोग, सब कुछ एक ही है का भाव से दूसरों को गौरव करते हुए, उनको बाधाएं नहीं देते हुए, अपना समान देखना चाहिए। एक बार मैं पत्री जी के साथ भूटान गया था। वहां पर एक पर्वत पर ट्रैकिंग के लिए गए थे। मतलब जो कुछ चढ़ सकता था वह पैदल चले, और जो नहीं पैदल गया उसने एक घोड़ा पर सवारी कर कर जा सकते हैं। एक घोड़े के लिए थोड़ा पैसा देना पड़ता था। तब मैं कहां पैदल जा सकता हूँ

करके घोड़े पर सवार करके जाने का सोच रहा था। लेकिन मैं सोचा था कि वह घोड़े और मैं एक ही हूँ ना ? तब मैं इसके ऊपर चढ़कर मैं उसको कष्ट देकर क्यों जाना है ? और मैं अपना कमरे में रह गया था।

इसके बाद एक संदर्भ में पत्री जी ने कहा है कि, अगर आप समझते हैं कि उसको कष्ट पहुँचाएंगे और चढते नहीं, तब उस घोड़े वाले को पैसे नहीं मिला तो कैसे खिलाएंगे उस घोड़े को ? वह कैसे उसका पोषण करेगा ? इसीलिए आपके धर्म मे रहकर आप जो देना है, देना है। तभी उसको पोषण कर सकता है। उस घोड़ा अपना काम करेगी, ऐसे कहा है। तब मुझे समझ आया है।

इसीलिए इसके ऊपर आप चढ़ो। और समय-समय पर उसका पानी और खाना कुछ भी कमी न होकर उसको खिलाओ। अगर आप उसको कुछ नहीं खिला करके भूखा रखेंगे तो, और उसके ऊपर चढ़कर मस्ती करना है, मतलब वह विरुद्ध है। इसीलिए भाव में अद्वैत रहना है, और कर्मों में द्वैत रहना है। कर्म करते वक्त पत्नी पत्नी ही है, और पति-पति है, और मालिक मालिक ही है, और कर्मचारी कर्मचारी ही है। लेकिन भाव में दोनों एक ही हैं, पत्नी को प्रेम करो, उनको सब कुछ देना है, उनको कुछ कमी नहीं करना है। पति को प्रेम करो और उनके प्रति आपका धर्म निभाओ। यही बात श्री वशिष्ठ महर्षि ने कहा है।

इसीलिए जिसका प्रवर्तन, श्री शंकराचार्य जी का बोध जैसे बदलाव आएंगे, बदलेंगे, रहेंगे, तब आप निर्वाण स्थिति में है। निर्वाण पाए हैं। उसी को जीवन मुक्त भी कहते हैं। इसीलिए मुमुक्षु, मतलब ध्यान साधना करने वाला, अपना व्यवहार और प्रवर्तन, ऊपर बताए गए जैसे हैं या नहीं को देखना चाहिए। अगर आपके अंदर बदलाव नहीं है, मतलब आपका साधना काफी नहीं है। साधना में कहीं कमी है का विषय जानना चाहिए। उस कमी को ठीक कर कर साधना आगे बढ़ाना चाहिए। कोई भी अपने आखिरी जीवन का लक्ष्य निर्वाण पाना ही है।

Information available on Tatavarthy's website:

Website address: www.tst.org.in

a) Details of programs conducted under the guidance of Mr. and Mrs. Tatavarthy and Google Maps location are available.

b) All books by Mr. and Mrs. Tatavarthy are available in PDF format for free download in Telugu, Kannada, Hindi, and English languages.

c) All the messages of Mr. and Mrs. Tatvarthy are organized in concept-wise YouTube playlists.

d) Summaries of Mr. and Mrs. Tatavarthy's messages are provided in the form of quotations.

e) The gallery of Mr. and Mrs. Tatavarthy is also available.

For registration of a 3 day free meditation and soul-knowledge training classes held in Bhimavaram on the 1st, 2nd, and 3rd of every month, contact Sindhura, 8555995217.

To subscribe to Tatavarthy's YouTube channel:

When you click the YouTube link sent in the WhatsApp group, it will open the Tatavarthy Veera Raghava Rao channel. Once open, you will see the "Subscribe" button-click on it to subscribe. By clicking the bell icon next to it, you can receive notifications of new videos everyday.

Otherwise, visit www.tst.org.in/videos/ Click on "Tatavarthy Veera Raghava Rao" in Section I, or on the names in sections II & III. This will open the respective channels. Once open, click the "Subscribe" button, and by pressing the bell icon next to it, you can get daily video updates.

To watch Tatavarthy's zoom sessions:

a) Silence meditation from **4 am** to **6.30 am** followed by messages related to soul-knowledge from **6.30 am** to **7.30 am**

Zoom ID: **2413823868** Password: **RAO**

b) The above-mentioned Zoom session will also be livestreamed on **YouTube** from **6.30am to 7.30am.**

c) Those who are in the TVR & TRL WhatsApp group will receive Zoom and YouTube links, along with details about the Tatavarthy's classes. They must save Sindhura's phone number: **8555995217**

d) Those who wish to join the Tatavarthy's WhatsApp group can contact Sindhura: 8555995217, Madhu: 7893917364 or visit www.tst.org.in and click on the "Join WhatsApp Group" link.

Programs by the Tatavarthy's that will be broadcasted on YouTube:

a) Channel name: **Tatavarthy Veera Raghava Rao**

This channel has 2,000+ videos featuring messages from Mr and Mrs Tatavarthy.

b) PMC has also launched a YouTube channel for Brahmarshi Tatavarthy Veera Raghava Rao.

Channel name: **Brahmarshi Tatavarthy Veera Raghava Rao.**

c) For messages from trainees who have trained under Mr. and Mrs. Tatavarthy, watch the Tatavarthy Spiritual Trainees YouTube channel.

d) You can also go directly to the YouTube app, type Tatavarthy Veera Raghava Rao in the search bar, and watch all the Mr. and Mrs.Tatavarthy videos.

Tatavarthy Raghavarao Sir
Books in English

1.	Life Science (Part-I)	Rs.120
2.	Why is Guiding Not Meditation ?	Rs.100
3.	Which is the right meditation ?	Rs.100
4.	Die before death!	Rs.120
5.	The Law of Karma	Rs.100
6.	Losses caused by Desires	Rs.100
7.	What is Meditation?	Rs.80
8.	True Path	Rs.80
9.	Why soul-knowledge	Rs.70
10.	What comes after death ?	Rs.70
11.	Learnings through the male and female births	Rs.70
12.	How to improve Financial Status ?	Rs.60
13.	Wisdom is attained only through Meditation	Rs.60
14.	What is Intention?	Rs.50
15.	Why is this life?	Rs.50
16.	Vegetarian Food Is Human Food	Rs.50
17.	Meditation for the Development of Students	Rs.40
18.	Non violence and vegetarianism	Rs.40

REBIRTH (Tatavarthy Rajya Lakshmi) Rs.150

श्री तटवर्ती वीर राघवराव के हिन्दी किताब

1. आत्म शास्त्र ।... Rs.200/-
2. ध्यान विद्या ।.. Rs.160/-
3. भगवद गीता का सार ।.. Rs.160/-
4. सत्य मार्ग ।.. Rs.160/-
5. मरने से पहले मरना है। Rs.130/-
6. गाईडिंग ध्यान क्यों नहीं ?....................................... Rs.120/-
7. भगवान कौन है।.. Rs.120/-
8. कर्म सिद्धांत ।... Rs.120/-
9. विज्ञान का अर्थ – निहितार्थ ।.................................. Rs.120/-
10. ब्रह्म ज्ञान ।.. Rs.100/-
11. यह जीवन क्यों है ? Rs.100/-
12. मेहर बाबा का संदेश ।.. Rs.100/-
13. कौन सा ध्यान सही है ?.. Rs.100/-
14. इच्छाओं के कारण होने वाली हानियाँ....................... Rs.100/-
15. मरने के बाद, साथ में आने वाले विषयों ।.................Rs.80/-
16. भगवत के दृश्यों का अर्थ ।..Rs.80/-
17. आत्म हंतक कौन होता है ।...Rs.70/-
18. स्त्री जन्मों में सीखने वाले विषयों, पुरुष जन्मों में सीखने वाले विषयों।. Rs.70/-
19. दुख निवारण का मार्ग..Rs.75/-
20. उत्तम पुरूष...Rs.60/-
21. आर्थिक स्थिति बढाना है तो ? Rs.60/-
22. निर्वाण मार्ग...Rs.60/-
23. सत्य...Rs.50/-
24. क्या हम इस लोक के वासी हैं या परलोक के वासी हैं ? Rs.50/-
25. गुरू को पहचानना कैसे ?...Rs.50/-
26. विद्यार्थियों के विकास के लिए ध्यान विद्या Rs.50/-
27. शाकाहार ही मानव का आहार है!................................Rs.50/-
28. ब्रह्मं क्या है ? Rs.50/-
29. शंकराचार्य जी का जाग्रत पंचक Rs.50/-
30. शंकराचार्य जी का निर्वाण शट्कम Rs.50/-
31. चैंपियन बनना हो तो ? Rs.50/-
32. संकल्प अर्थात ? Rs.40/-

श्री शंकराचार्य जी ने कहा है कि,

- मानस, बुद्धि, चित्त, अहंकार, के वृत्तियों वाला अंतःकरण मैं नहीं हूँ। ज्ञानेंद्रियों मैं नहीं हूँ। पांच भूतों मैं नहीं हूँ।
- पंचवायु मतलब पांच प्राणों मैं नहीं हूँ। सप्त धातुओं मैं नहीं हूँ। पंचकोषों मैं नहीं हूँ। कर्मेंद्रियां जैसे हाथ, पैर, वॉक, मल द्वार, मूत्र द्वार मैं नहीं हूँ।
- राग, द्वेष, या लोभ, मोह, मैं नहीं हूँ। मद, मात्सर्य मैं नहीं हूँ। मैं सर्वात्म और नित्य मुक्त हूँ। इसलिए मुझे, पुरुषार्थ कहलाने वाले, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, नहीं है।
- पुण्य और पाप मैं नहीं हूँ। सुख और दुख मैं नहीं हूँ। मंत्र और पुण्यक्षेत्र मैं नहीं हूँ। वेदों और वेदविहित यज्ञों मैं नहीं हूँ।
- मुझे (आत्मा) को मौत नहीं है। भय नहीं है। न स्त्री हूँ ना पुरुष हूँ। कोई लिंग या जाति भेद नहीं है। मैं पैदा नहीं होता ना मुझे मौत होता है। मुझे न बंधु, न मित्र, न गुरु, न शिष्य है।
- मुझे कोई विशेषताएं नहीं है। निराकार हूँ, व्यापक हूँ, मैं सर्व देशों में, सर्व कालों में, सारे वस्तुओं में, रहने वाला हूँ। मैं मुक्त हूँ, स्वतंत्र हूँ, मैं संगी नहीं हूँ, मैं केवल ज्ञानमय आत्मा हूँ ।

मैं चिदानंद स्वरूप शिव ही हूँ, मैं शिव ही हूँ को कहा है।

Rs.50/-

-ब्रह्मर्षि तटवर्ति वीर राघव राव